24. पर्यटन

सैक्टर
एक दृष्टि में

वार्षिक योजना वर्ष 2014–2015 में योजना हेतु प्रस्तावित राशि

- आयोजना बजट सीलिंग राशि 3.00 लाख
- राज्य आयोजना मद 3.00 लाख
- केन्द्रीय योजना मद शुन्य

लक्ष्य एवं उदेश्य

- पर्यटक स्थलों का विकास एवं रख–रखाव
- पर्यटकों को आकर्षित कर पर्यटक संख्या में वृद्धि करना

पर्यटन विभाग का दृष्टि पत्र

20.1 वर्तमान स्थिति

- पर्यटक स्थल
  - महल/किले 40
  - बावड़ी 48
  - मन्दिर 50
  - प्राकृतिक स्थल 09
- पर्यटक संख्या
  - देशी पर्यटक 12430
  - विदेशी पर्यटक 10627

जिला मुख्यालय नागौर में स्थित बंशीवालें का मन्दिर तथा ब्रह्माणी माता का मन्दिर 15वीं शताब्दी इस्वी से भी पुराने हैं। नागौर का किला दूसरी शताब्दी ईस्वी में नागों द्वारा बनवाया गया था। यहां मिट्टी का किला था। बाद में इसी स्थान पर चौहानों द्वारा नया किला बनवाया गया। प्रतिहारों व राठौड़ों ने इसकी मरम्मत करवाई तथा कई नवीन निर्माण करवाये। राठौड़ कालीन अनेक निर्माण दुर्ग, परिसर में आज भी दर्शनीय है। जिला मुख्यालय पर स्थित वीरवर राव अमरसिंह और उनकी रानियों की छतरियां सामंती युग की गौरव गाथा कहती है। सूफी सन्त हमीदुद्दीन सुल्तानुतारेकीन की, बड़े पीर साहब की दरगरह तथा जैनियों की दादावाड़ी भी दर्शनीय है। जिला मुख्यालय से पांच किलोमीटर दूर ताउसर गांव के जंगल में सिन्धिया जनरल अप्पाजी की छतरी तथा जिला मुख्यालय से लगभग चार किलोमीटर दूर नाथों की छतरी बड़ली भी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थल है। जिला मुख्यालय से लगभग आठ किलोमीटर दूर सांईजी का टांका साम्प्रदायिक सद्भाव का प्रतीक है।

eMrkfIVh & मीराबाई का मन्दिर 15वीं शताब्दी के लगभग चारभुजाजी की जमीन में से निकली मूर्ति के लिए बनवाय गया। इसमें भगवान चारभुजा के साथ भक्त शिरोमणी मीराबाई तथा राठौड़ राजा जयमल की मूर्तियां भी दर्शनीय है। राव मालदेव द्वारा बनवाया गया मालकोट राज भी खण्डहर रूप में देखा जा सकता है। मेड़ता की जामा मस्जिद भी मध्यकालीन है। डागोलाई तालाब पर कप्तान डी बौरबोन की कब्र भी दर्शनीय है। मेड़तासिटी से लगभग 15 किलोमीटर दूर मेड़तासिटी (फलोदी) गांव स्थित है। यहां फलवर्द्धिका माता का अत्यन्त प्राचीन मन्दिर एवं पार्श्वनाथ का मध्यकालीन मन्दिर दर्शनीय है।

tluxj & मेड़तासिटी से लगभग 30 किलोमीटर दूर स्थित जसनगर गांव के प्राचीन शिवालय में 12वीं शताब्दी ईस्वी के कई सिलालेख लगे हुए हैं। मन्दिर इससे भी पुराना हो सकता है। यह मन्दिर संसार भर के किसी भी समृद्ध एवं उत्कृष्ट शिल्पकला वैभव से मुक्त मन्दिर से स्पर्धा कर सकता है। हालांकि अब इस मन्दिर का बहुत छोटा खण्ड ही शेष है। इसी मन्दिर के पास एक मध्यकालीन जैन मन्दिर है जिसमें अकबर के शासनकाल का जोधपुर नरेश मोटाराज उदयसिंह का एक शिलालेख प्राप्त हुआ था।

Hkoky & मेड़ता से लगभग 25 किलोमीटर दूर भवाल गांव में अत्यन्त प्राचीन ब्रह्माणी माता का मन्दिर स्थित है। यह मन्दिर 13वीं शताब्दी का माना जाता है। अब इस मन्दिर का कुछ ही हिस्स शेष बचा है जिसमें मूल गर्भगृह भी शामिल है। इस मन्दिर में ब्रह्माणी माता की मूर्ति के पास ही काली माता की मूर्ति ढाई प्याला शराब पीती हैं। ब्रह्माणी माता को मेवा–मखाने का प्रसाद चढ़ता हैं

xkB&ekxykn & जिला मुख्यालय से लगभग 40 किलोमीटर दूर गोठ–मांगलोद जिले का सबसे पुराना मन्दिर है। यहां से गुप्ताकलीन शीलालेख भी प्राप्त हुआ है। मन्दिर में स्थापित दधिमति माता का दाधीच ब्राह्मणों की कुलदेवी है। साल में दो बार यहां विशेष मेले लगते हैं। मन्दिर की प्राचीन स्थापत्य कला देखने योग्य है।

MhMokuk & जिला मुख्यालय से 100 किलोमीटर दूर स्थित डीडवाना में डीडवाना झील तथा इसके किनारे पाड़ा माता का मन्दिर दर्शनीय है। पाड़ा माता को सरकी माता भी कहा जाता है। यह मन्दिर मूल रूप में शिवालय था लेकिन बाद में देवी मन्दिर में परिवर्तित किया गया। यहां श्यामजी तथा वाराही माता के मन्दिर भी दर्शनीय हैं। कुछ पुरानी मस्जिदों, नगर परकोटा तथा निरंजनी साधुओं की हवैलियां दर्शनीय है। डीडवोना झील में नमक का उत्पादन होता है। किसी जमाने में इस झील से सोडियम सल्फैट भी बनता था जो कागज बनाने के काम आता था।

dqpkeu fdyk & कुचामन का किला राजस्थान के दुर्गम किलों में से एक हैं। मध्यकाल में इस किले का ठाकुर मारवाड़ में अच्छी प्रतिष्ठा रखता था। किले में एक टक्साल भी थी जहां चांदी व तांबे के सिक्के जोधपुर नरेश की तरफ से ढ़ाले जाते थे। कुचामन दुर्ग में भव्य महल शस्त्रागर, रनिवास, अन्न–भण्डार व पानी के विशाल टांके, शीष महल, हवा महल, अश्व शाला, ऊंट शाला, हस्ति शाला, सूर्य मन्दिर तथा पानी की नहर दर्शनीय है। कुचामन के नावा शहर में एमरी स्टोन की चक्कियां अच्छी बनती है।

edjkuk & आगरा के ताजमहल से लेकर देलवाड़ा के जैन मन्दिर तथा कलकत्ता का विक्टोरिया मेमोरियल मकराना के संगमरमर से ही निर्मित है। मकराना नगर छैनी–हथौडों की मदद से संगमरमर के नरम सीने में विविध आकृतियां उतारने में व्यस्त हैं। दूर–दूर सफेद संगमरमर की खानें तथा कटाई, चिराई के कारखाने फैले हुए हैं। कहते हैं कि अकबर का बुद्धिमान दरबारी बीरबल मकराना के गुणावती गांव का रहने वाला था।

20.2 योजना के लक्ष्य एवं उदेश्य

- पर्यटक स्थलों का विकास एवं रख–रखाव
- पर्यटकों को आकर्षित कर पर्यटक संख्या में वृद्धि करना